भारतीय समाज में किन्नर समुदाय का सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष : एक समाजशास्त्रीय विमर्श

Jyoti Kumari Sonkar

किसी की खुशी में वे साथ निभाने की हर कोशिश करते हैं पर उनकी खुशी की षायद किसी के लिए कोई कीमत ही नहीं एक अभिशप्त जिन्दगी की तस्वीर वे केवल इसलिए बन जाते हैं क्योंकि आम लोगों से वे थोड़े अलग हैं, वरना कानून ने अपराध बना दिया लेकिन जीने के लिए जो जरूरी होता है वह हर अधिकार उनसे छीन लिया, फिर जीना क्या और मरना क्या? जीने में खुशी–गम की तो बात ही छोड़ दो मरने के बाद भी उन्हें चैन नहीं, वे जूते–चप्पलों से पीटे जाते हैं उनकी लाश गालियाँ सुनते हैं वे फिर भी बिना किसी शिकायत के खुशी–खुशी जीते हैं।

भारतीय समाज विविधताओं से युक्त एक ऐसा समाज है जहाँ कई संस्कृतियों के मिल जाने से इसकी संरचना में विविधता आ गयी है। यहाँ विभिन्न जाति, धर्म, सम्प्रदाय के लोग एक साथ निवास करते हैं, किन्तु इन सभी की सामाजिक–सांस्कृतिक पहचान अलग–अलग होने के कारण उनके रहन–सहन, खान–पान, तौर–तरीके ओर वेशभूषा में अन्तर दिखाई पड़ता है। यह समाज कई आयामों पर संगठित होकर अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। इन्हीं आयामों के साथ भारतीय समाज संचालित होते हुए **अनेकता में एकता** का प्रमाण देता है। अनेकता में एकता का सन्देश देने वाला यह समाज असमानता के जाल में बँधा दिखाई पड़ता है, जिसमें ऊँच–नीच, छुआछूत जैसे भेदभाव अनायास ही पैदा हो जाते हैं। भेदभाव के इसी असमानता मे सबसे निचले पायदान पर समझने वाला एक किन्नर समुदाय भी है जो प्रारम्भ से ही समाज का अंग होते हुए भी हाशिए पर बना रहा। हाशिए पर जीने को विवश इस समाज को मुख्य धारा के समाज में हमेशा से अपमान, घृणा और तिरस्कार ही मिला। आज आवश्यकता है इन वंचित तबके को भारतीय

समाज की संरचनात्मक व्यवस्था में समानता का दर्जा दिलाते हुए इस समाज की विविधता में एकता के प्रमाण को साबित करना है।

समाज में पुरातन काल से लिंगों का निर्धारण कठोर रूप से दो ही रूपों में हुआ है– महिला और पुरुष के रूप में किन्तु समाज में एक और वर्ग देखने को मिलता है जिनके लिंग का निर्धारण निश्चित नहीं होता है उन्हे किन्नर या ट्रांसजेण्डर कहा जाता हैं। किन्नर पद ऐसे व्यक्तियों के लिए प्रयोग किया जाता है जो कि निर्धारित लिंगों से भिन्न होती हैं या जिनकी शारीरिक विशेषताओं के निर्धारण में असमंजस की स्थिति होती है। किन्नर वे लोग होते हैं जिनका जन्म के समय लिंग नर होता है किन्तु वे विपरीत लिंग के कपड़े पहनते हैं और अपना जीवन स्त्रियों की भाँति जीते हैं। इनका एक अलग समुदाय होता है, जहाँ वे नाच–गाना करके अपनी आजीविका चलाते हैं। इनका रहन–सहन, पहनावा आम लोगों की अपेक्षा अलग होता है।

किन्नरों की उत्पत्ति के बारे में दो अपवाद है एक तो यह कि वे ब्रह्म की छाया अथवा उनके पैर के अँगूठे से उत्पन्न हुए है और दूसरा यह कि अरिष्टा और कश्यप उनके आदि जनक थे शाब्दिक अर्थों में कहा जाता है कि रक्त की मात्रा अधिक हो तो लड़की का जन्म होता है और वीर्य की मात्रा अधिक हो तो लड़का जन्म लेता है और यदि रक्त तथा वीर्य दोनों की मात्रा समान हो तो किन्नर का जन्म होता है, परन्तु इसे पूर्ण रूप से सिद्ध नहीं किया जा सकता कि इनका जन्म कैसे हुआ।

वैसे किन्नरों को चार वर्गों में विभक्त किया गया है–बुचुरा, नीलिमा, मनसा और हंसा। वैसे वास्तविक हिजड़े, तो बुचुरा ही होते हैं क्योंकि ये जन्मजात न पुरुष और न स्त्री होते हैं, नीलिमार किसी कारणवश स्वयं को हिजड़ा बनने के लिए समर्पित कर देते हैं। मनसा तन के स्थान पर मानसिक तौर पर स्वयं को विपरीत लिंग अथवा अक्सर स्त्री लिंग के अधिक निकट महसूस करते हैं और हंसा शारीरिक कमी यथा नपुंसकता आदि न्यूनताओं

के कारण बने हिजड़े होते हैं नकली हिजड़ों को अबुआ कहा जाता है जो वास्तव में पुरुष होते हैं किन्तु धन के लाभ में हिजड़े का स्वांग रख लेते हैं जबरन बनाए गए हिजड़े, छिबरा कहलाते हैं| सम्पूर्ण हिजड़े (किन्नर) समुदाय को सामाजिक संरचना की दृश्टि से सात समाज या घरानों में विभक्त किया किया गया है, हर घराने के मुखिया को नायक कहा जाता है, ये नायक ही अपने डेरे या आश्रम के लिए गुरु का चयन करते हैं।

हिमालय का पवित्र शिखर कैलाश किन्नरों का प्रधान निवास स्थान था जहाँ वे शंकर जी की सेवा किया करते थे उन्हें देवताओं का गायक और भक्त समझा जाता है और यह विश्वास है कि यक्षों और गन्धर्वों की तरह वे नृत्य और गान में प्रवीण होते थे। किन्नरों के लिए सर्वाधिक प्रचति कथा भगवान राम के वनवास से सम्बन्धित है। पौराणिक आख्यानों में वर्णित है कि जब पिता की आज्ञा का पालन करते हुए श्री राम जी सीता और लक्ष्मण के साथ 14 वर्ष के वनवास के लिए अयोध्या छोड़कर चित्रकूट पहुँच गए थे, तो उन्हें मनाकर वापस अयोध्या लाने हेतु भरत अयोध्यावासियों और किन्नरों के साथ चित्रकूट गए थे लेकिन प्रभु राम ने भरत तथा अयोध्यावासियों और हिजड़ों की अनुनय–विनय को अस्वीकार करते हुए सभी नर–नारियों को वापस अयोध्या जाने को कहा परन्तु उन्होंने किन्नरों (हिजड़ों) के लिए कुछ नहीं कहा जबकि वे भी उन्हें मनाने हेतु वहाँ उपस्थित हुए थे उनके लिए प्रभु का कोई स्पष्ट आदेश न होने के कारण उन किन्नरों ने 14 वर्षों तथा वही रुककर प्रभु राम के वापस आने की प्रतीक्षा करने का निर्णय लिया जब 14 वर्षों बाद भगवान राम वापस अयोध्या जा रहे थे तो उन्होंने इन हिजड़ों (किन्नर) को मार्ग में चित्रकूट में अपनी प्रतीक्षा करते पाया। प्रभु द्वारा उनके वहीं रुकने का कारण पूछने पर इन निर्मल किन्नरों ने बताया कि जब हम भरत के साथ यहाँ आपको मनाने हेतु आये थे तो आपने कहा था कि सभी नर–नारियाँ वापस अयोध्या चले जाइये, परन्तु आपने हमारे लिए कुछ नहीं कहा, इसलिए हम लोग यहाँ आपके आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। प्रभु श्री राम हिजड़ों की इस निश्छल और निःस्वार्थ भाव से अत्यधिक प्रभावित हुये और उन्होंने

प्रसन्न होकर किन्नरों को वरदान दिया कि कलयुग में तुम लोग राज करोगे, तुम जिन्हें अपना आशीर्वाद दोगे, उसका कभी अनिष्ट नहीं होगा, तब से किन्नर बच्चों के जन्मोत्सव, षादी–विवाह, त्योहार आदि के शुभ अवसरों पर लोगों को आशीर्वाद प्रदान करते हैं बदले में लोग उन्हें उपहार या भेंट देते हैं। वे केवल मांगलिक कार्यों में ही जाते हैं।

किन्नर समुदाय में गुरु–षिश्य जैसी प्राचीन परम्परा आज भी यथावत् बनी हुई है। किन्नर समुदाय के सदस्य स्वय को मंगलमुखी मानते हैं किसी नये व्यक्ति को किन्नर समाज में शामिल करने के लिए कई रीति–रिवाज हैं, जिनका पालन–किया जाता है नये किन्नर को शामिल करने से पहले नाच–गाना और सामूहिक भोज होता है कहा जाता है कि यदि किसी की कुण्डली में बुध ग्रह कमजोर हो तो किसी किन्नर को हरे रंग की चूड़ियाँ व साड़ी दान करनी चाहिए, इनकी दुआओं में इतनी ताकत होती है कि आपके बुरे समय को भी अच्छे समय में बदल सकती है। यही कारण है कि किसी के घर में शुभ कार्य होने पर किन्नरों को बुलाया जाता है।

किन्नरों का विवाह

किन्नरों का विवाह उनके आरावन देवता से एक दिन के लिए होता है। अगले दिन आरावन की मृत्यु के साथ उनका वैवाहिक जीवन समाप्त हो जाता है।

आपको यह जानकर शायद हैरानी हो कि किन्नर की मौत किसी भी समय हो, लेकिन उनकी शवयात्रा हमेशा रात्रि को ही निकाली जाती है। शवयात्रा को उठाने से पूर्व जूतों–चप्पलों से पीटा जाता है और किसी गैर किन्नर को नहीं दिखाया जाता है, ऐसा माना जाता है कि ऐसा करने से मरने वाला अगले जन्म में भी किन्नर ही पैदा होगा, इसीलिए उनके मरने के बाद पूरा किन्नर समुदाय एक सप्ताह तक भूखा रहता है व दान–पुण्य करता है और भगवान् से प्रार्थना करता है कि दोबारा इस रूप में हमें जन्म न मिले। उनके लिए यह उनके मरने की रश्म भी है और पूरी जिन्दगी पर सवाल उठा रहता है कि आखिर किसी का जीना इतना अभिशप्त कैसे हो सकता है।

किन्नरों की समस्याएं

आज किन्नर जैसा कोई देश नहीं है लेकिन किन्नर देश मे रहते जरूर हैं। किन्नरों का अस्तित्व दुनिया के हर देश में है समाज में उनकी पहचान भी है फिर भी उन्हें आम इन्सानों की तरह नहीं समझा जाता, उन्हें बराबरी का दर्जा नहीं दिया जाता। समाज में रहने वाले लोग उन्हें हेय दृश्टि से देखते हैं। आखिर क्यों उन्हें इस तरह सामाजिक तिरस्कार झेलना पड़ता है ? क्यों समाज उनके प्रति लचीला रुख नहीं अपनाता, सवाल बहुत हैं लेकिन जवाब कोई नहीं, इनके आधे–अधूरे पन की वजह से भले ही समाज इन्हें अपना अंग मानने से इंकार करता रहे, मगर वास्तविकता यही है कि ये समाज के अंग हैं। अन्धे, कोढ़ी और अपंग लोगों की तरह किन्नर भी लाचार हैं। मनुश्य के रूप में जन्म लेने के बावजूद किन्नर अभिशप्त जीवन जीने के लिए मजबूर हैं। किन्नर समुदाय का सामाजिक बहिष्कार एक ऐसा पद है, जिससे किन्नरों के साथ होने वाले सामाजिक भेद–भाव से उनका मनोबल टूट रहा है। किन्नर समुदाय को सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन आर्थिक, राजनीतिक और निर्णय लेने की प्रक्रिया से दूर रखा जा रहा है। सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन से बहिष्कार की अभिप्राय परिवार और समाज से बहिष्कार, हीनता से सुरक्षा का अभाव, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुँच से है। यदि कोई नर शिशु अपने अपेक्षित लैंगिक भूमिका से विपरीत लैंगिक भूमिका निभाने लगता है तो अधिकांश परिवार ऐसे शिशु को स्वीकार नहीं करते। महिलाओं की तरह कपड़े पहनने या उनकी तरह व्यवहार करने पर परिवार के लोग अपने बच्चे को डांटते–मारते और धमकी देते है। कुछ परिवार तो समाज के मूल्यों की विपरीत लैंगिक भूमिका करने पर अपने बच्चों को सभी अधिकारों से बेदखल या पूर्णतया त्याग देते हैं। परिवार के लोगों का मानना है कि बच्चे के इस कार्य से परिवार के लोगों का अपमान होता है। और उस बच्चे के विवाह के अवसर भी कम हो जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप उनका वंश खत्म हो सकता है (यदि उनका सिर्फ एक ही पुत्र है)। कुछ बच्चे अपने परिवार द्वारा किये जाने वाले भेदभावपूर्ण

व्यवहारों को सहन नहीं कर पाते या अपने परिवार के लिए लज्जा का कारण न बने इसीलिए घर को छोड़कर भाग जाते हैं। कम उम्र में घर छोड़ देने के कारण ये अशिक्षित रह जाते हैं। परिणामस्वरूप उनकी स्थिति दयनीय होती जाती है उनकी स्थिति को सुधारने के लिए सामाजिक भेदभाव की यह परिस्थिति समाप्त होनी चाहिए। उन्हें तिरस्कार उपेक्षा की नहीं बल्कि प्यार और सम्मान की जरूरत है।

इनकी दृष्टिकोण को देखते हुए महेंद्र भीष्म ने अपनी पुस्तक ''किताब महल'' (2011) में कहा है कि राजघराने में जन्मी सोना उर्फ चांदी के राज को माँ अपनी ममता के कारण बहोत दिनों तक प्रकट नहीं होने देती, लेकिन जब यह पता हो जाता है कि सोना किन्नर है तो राजा जगतराज सिंह उसे मारने का आदेश देता है। महेन्द्र भीष्म ने जगह–जगह उस माँ की ममता और उसकी पीड़ा को उजागर किया है, जिसकी सन्तान को किन्नर होने के कारण उससे दूर कर दिया जाता है साथ ही उन्होंने यथार्थ स्थिति को भी अपनी टिप्पणी के माध्यम से स्पष्ट किया है। ''संतान कैसी भी हो, उसमें शारीरिक, मानसिक कमी क्यों न हो, माता–पिता को अपनी संतान हर हाल में भली लगती है, प्यारी होती है, फिर भले ही वह संतान हिजड़ा ही क्यों न हो। फिर भी सामाजिक परिस्थिति, खानदान की इज्जत–मर्यादा, झूठी, शान के सामने अपने हिजड़े बच्चे से उसके जन्मदाता हर हाल में छुटकारा पा लेना चाहते हैं यह एक कटु सत्य है।''

इनकी पहचान को सुनिश्चित करने के लिये भारत सरकार द्वारा इनके लिए विभिन्न योजनाएं बनाई जा रही है।

नवम्बर 2009 में सरकार ने इनको पुरुशों एवं महिलाओं से अलग पहचान को स्वीकृ ति प्रदान की। अब देश में मौजूद 50 लाख से भी अधिक किन्नरों को तीसरे दर्जे में शामिल कर दिया गया है। अपने इसी हक के लिए किन्नर बिरादरी वर्षों से लड़ाई लड़

रही थी। 1871 से पहले तक भारत मे किन्नरों को ट्रांसजेण्डर का अधिकार मिला हुआ था मगर 1871 में अंग्रेजों ने किन्नरों को क्रिमिनल ट्राइब्स यानि जरायमपेशा जनजाति की श्रेणी में डाल दिया था। बाद में आजाद हिन्दुस्तान का जब नया संविधान बना तो 1951 में किन्नरों को क्रिमिनल ट्राइब्स से निकाल दिया गया। मगर उन्हें उनका हक तब भी नहीं मिला था आज किन्नरों के साथ हो रहे अपमान जनक भेदभाव को देखते हुए 2014 में एक ऐतिहासिक फैसले में सामान्यतः हिजड़ों के रूप में जाना जाने वाले किन्नर समुदाय भारतीय नागरिकों का एक हिस्सा हैं, जिन्हें समाज द्वारा अप्राकृतिक और साधारणतया उपहास की वस्तुओं के रूप में देखा जाता है। अन्ध विश्वास के कारण सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि संवैधानिक गारण्टी के अनुसार किन्नर समुदाय को मूलभूत अधिकार या व्यक्तिगत स्वतन्त्रता स्वाभिमान, अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता शिक्षा का अधिकार और अधिकारिता हिंसा, भेदभाव और शोषण के विरुद्ध अधिकार और काम करने का अधिकार दिया जायेगा। इनके अलावा सुप्रीम कोर्ट के आदेष पर राज्यसभा ने 2014 में **किन्नर के अधिकार विधेयक** के नाम से एक बिल पारित किया जिसके सांसद तिरुचिषिण ने निजी विधेयक के रूप में इस बिल को 2015 में पेश किया। इस बिल की **10 अध्यायों में विभाजित 58 धाराएँ** हैं जिसमें किन्नरों को तीसरे वर्ग का दर्जा दिया गया है उन्हें हिजड़े के नाम के स्थान पर किन्नर नाम से सम्बोधित किया गया है। इसके अलावा इनको आपस में विवाह करने का अधिकार, बच्चा गोद लेने का अधिकार, अपने परिवार में उत्तराधिकारी के रूप में रहने का अधिकार साथ ही इनका राशन कार्ड, पेन कार्ड, आधार कार्ड, जन्म प्रमाण पत्र, पहचान पत्र, बैंक पासबुक आदि पर इनके नाम तीसरे वर्ग के रूप में उल्लेखनीय किये गये हैं साथ ही साथ इनको सामाजिक, आर्थिक अधिकार एवं कानूनी सहायता, शिक्षा कौशल विकास तथा हिंसा व षोशण रोकने का प्रावधान करते हैं इसी बिल में उनके लैंगिक समानता के अधिकार के साथ शिक्षा व नौकरियों में आरक्षण की व्यवस्था है।

इसके अलावा इनके लिए अलग से एच0आई0वी0 स्वास्थ्य केन्द्र की स्थापना की गयी है, बिल में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि उनके मामले के लिए अलग से अधिकार न्यायालय की स्थापना की जाय। साथ ही साथ आध्यात्मिक, सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी किन्नरों को अधिकार मिलना शुरू हो गया है संस्कृति और समाज से दूर अस्तित्व के दोराहे पर खड़े किन्नर समाज का धर्म के मेले में ही राजतिलक हुआ। हाल ही में प्रयागराज में हुए महाकुम्भ में पहली बार किन्नरों को भी स्नान करने का अधिकार प्राप्त हुआ सूर्य के उत्तरायण होते ही प्रयागराज में किन्नर स्नान के उदय के बाद संस्कृति का यह अध्याय काफी चर्चित रहा। यहाँ 13 अखाड़े के साथ 14वां अखाड़ा किन्नर अखाड़ा को भी सम्मिलित किया गया है। देव मन्दिरों में श्रृंखला को लेकर बधाइयाँ गीतों में किन्नर रहते हैं। हालांकि सालों पहले इनकी भूमिका तुलसीदास जी ने देव दनुज किन्नर नर श्रेणी सादर मज्जीह सकल त्रिवेणी के जरिए स्पष्ट कर दी थी फिर भी सालों तक चर्चा में उलझे इनके अधिकारों पर संस्कृति और आध्यत्म के मेले में मुहर लगी।

सालों तक चले संघर्ष ने डुबकी लगाई सुरक्षा के घेरे में भी यू मासूम संस्कृति अठखेली करती नजर आई आखिर धर्म की लहरों के बीच एक उपेक्षित समाज का तिलक वन्दन जो हुआ गंगा भी कुछ ऊपर तैरने लगी और उनकी चरण रज के जरिए यह फल कुम्भ के इतिहास में कैद हुआ।

समाज के लोगों के दृष्टिकोण को देखते हुए लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी ने कहा हम सनातन धर्म के हैं, उपदेवता हैं हमने सालों संघर्ष झेला है। आज उसी समाज का परिणाम है कि स्वयं धर्म के मेले ने हमें अपनाया है संगम ने गोद में खिलाया है। जितने भी किन्नरों ने यहाँ स्नान किया है उनकी ओर से मैं पूरी मानव समाज के हित की कामना करती हूँ यह सनातन धर्म की महिमा हो सकती है कि जहाँ सालों तक समाज ने संस्कृति और समाज से अलग रखा वहीं सबसे संस्कृति के मेले में बाहें खोलकर हमारा स्वागत किया।

कोर्ट के द्वारा सरकार को दिया गया आदेश–

- सरकार इनकी पुरानी सांस्कृतिक और सामाजिक प्रतिष्ठा की पहचान दिलाने के लिए कदम उठाए।
- सरकार किन्नरों को समाज की मुख्य धारा में षामिल करने के प्रयास करे ताकि किन्नर अपने को अछूत या अलग–थलग न महसूस करें।
- इन्हें अस्पतालों में चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराए और अलग से पब्लिक टायलेट व अन्य सुविधाए उपलब्ध कराए।
- सरकार इनकी बेहतर स्थिति के लिए सामाजिक कल्याण योजनाएँ बनाए।
- सरकार किन्नरों की सामाजिक समस्याओं जैसे भय, अपमान, शर्म व सामाजिक कलंक आदि के निवारण के गम्भीर प्रयास करे।
- सरकार इनकी चिकित्सा समस्याओं के लिए अलग से एच0आई0वी0 सीरो सर्विलांस केन्द्र स्थापित करे।
- किन्नरों को अपने लिंग की पहचान तय करने का हक है केन्द्र व सभी राज्य सरकार उन्हें कानूनी पहचान दे।

संविधान के अनुच्छेद 14, 15, 16, 19 और 21 हिजड़ा या टीजी समूह के सदस्यों को अपनी सीमाओं से बाहर नहीं करते हैं वास्तव में इन अनुच्छेद में प्रयुक्त शब्द व्यक्ति, नागरिक और लिंग सम्पूर्ण मानव प्राणी को संकेतिक करता है जो निःसन्देह हिजड़ा (किन्नर) और टीजी समूह तक विस्तारित है।[7]

निष्कर्ष :

किन्नरों (थर्ड जेण्डर) के प्रति हम लोग समाज की मिली–जुली प्रतिक्रिया देखते हैं। समाज के जिन लोगों का किन्नरों के साथ पहले कभी अथवा लगातार मेलजोल रहा है वे बहुत जल्दी उन लोगों को स्वीकार करते हैं उनसे अच्छा व्यवहार करते हैं कई बार तो लोग उन्हें दैवीय रूप में भी देखते हैं, लेकिन समाज का एक बड़ा तबका ऐसा है जो अपने कुछ पूर्वाग्रहों के कारण उनसे दूर भागता है शायद किन्नरों का समाज से पर्याप्त मेलजोल नहीं होने से वे एक झिझक के कारण उन्हे कुबूल नहीं करते इस प्रकार वे लोग समाज से दो भिन्न प्रकार की प्रतिक्रियायें देखते हैं एक बहुत सकारात्मक तो दूसरा अत्यन्त ही नकारात्मक उपेक्षात्मक। किन्नरों के प्रति ये दोनों नजरिया समाज का रहता है। समाज का ये दोनो ही अतिवादी नजरिया उनके विकास के लिए सही नहीं है। क्या मानव समाज की मानसिकता यही है आखिर क्यूं हम उन्हें अपनाने से इन्कार कर रहे हैं। वह भी हमारी तरह इन्सान हैं। आखिर कब तक उनके साथ भेदभाव की यह स्थिति बनी रहेगी उनके साथ हो रही भेदभाव की यह स्थिति समाप्त करने के लिए हमें अपनी सोच बदलनी होगी। उन्हें व्यवहारिक रूप से अपनाना होगा तब जाके उनका विकास सम्भव हो पायेगा आज दिन–प्रतिदिन खुल रहे और विकसित हो रहे समाज ने अब इन्हें थोड़ा सा ही सही स्पेष देना शुरू कर दिया है और शीघ्र ही हम वह दिन भी देखेंगें जब ये भी समाज में सामान्य लोगों की भाँति अपने मानवाधिकार के साथ जीवनयापन कर सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. सांकृत्यायन राहुल, (1948) किन्नर के देश में, किताब महल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. शर्मा बंशीराम, (1976) किन्नर लोक साहित्य, ललित प्रकाशन, हिमाचल प्रदेश,
3. कृष्णनाथ (1983) किन्नर धर्म लोग, सातवाहन प्रकाशन, नई दिल्ली,
4. Nanda S. (1999) Neither man nor women, The Hijras of India, NewYark Wadsworth Publishing Co.

5. भारद्वाज प्रवेश, (2002) किन्नर समुदाय की प्रगति, भागर्व भूषण प्रेस वाराणसी,

6. महेन्द्र भीष्म, (2011) किन्नर कथा, सामयिक बुक्स प्रकाशन, नई दिल्ली,

7. Chakrapani Dr. Venkatesan, (2010) Hijras/Transgender Women in India : HIV, Human Rights and Social Exclusion,

8. त्रिपाठी लक्ष्मी नारायण, (2015) मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

9. तुलसीदास (1402), रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दोहा 133 पृ0सं0 412

10. Social Exclusion, from http//www.therfreedictionary.com/ social+exclusion

11. घटना चक्र पत्रिका (2012) पृ0सं0 15

12. www.bbc.com

13. www.wikipedia.com